दयालु सिद्धार्थ

एक दिन जब सिद्धार्थ बगीचा मा घूमत रहे तब्बय खून से लथपथ एक हंस उनके लगे गिरा ,ऊ बेचारा तीर से घायल हुइ गवा रहा ,सिद्धार्थ सावधानी से ऊ तीर निकारिन औ घाव साफ़ किहिन ,थोरी देर बाद सिद्धार्थ कै चचेरा भाई देवदत्त आवा औ कहिस ,यू हंस हमार आय ,ईका हम तीर मारा है ,हमका देव ईका

सिद्धार्थ कहिन यू हंस केतना नीक लागत है फिर तुम ईका मारा काहे चाहत हौ ?

देवदत्त कहिस ,"ईका हम तीर मारा है ,यू हमार सिकार आय "

मुला सिद्धार्थ ऊ घायल हंस देवदत्त का नहीं दिहिन ,झगड़ा राजा के दरबार मा पहुंचा ,देवदत्त कहिस ,"ईका हम तीर मार कै गिराए हन ,यू हमार आय "सिद्धार्थ कहिन ,"महराज ,ई हंस कै जान हम बचाएन है ई मारे ईका हमरे लगे रहै का चही"

राजा कहिन,"सिद्धार्थ तुम ठीक कहत हौ,तुम ई चिरई कै जान बचायेव है ,ई मारे ई पै तुम्हार हक जादा है ,तुम ई हंस कै सेवा करौ "

महराज ! हम यहिके देहीं से तीर न निकारित तौ या चिरई कब का मरि जात ,अब यू फैसला आपै करौ कि चिरई कीका मिलै का चाही जे ईका तीर मारिस कि जे ईकै जान बचायिस !

तुम ठीक कहत हौ,जे चिरई कै जान बचाइस ,वहिकै हक्क जादा है .देवदत्त ई चिरई देव दत्त का मिलै का चही

अभ्यास

- अगर तुम राजा होतिव तौ चिरई कीका देतिव ?
- ई कहानी से तुमका का सीख मिलत है ?
- हमका जानवर औ चिरई की मदद करै का चही कि नाहीं ?
- हमका जानवर –चिरई के उप्पर दया देखावै का चाही कि नाहीं ?

- तुम कब्बव कोनव जानवर औ चिरई कै जिव बचायेव है ?कब?कैसे? सोंचव ,बताऊ